क्रिस्टोफर कोलंबस

डेविड, चित्र : जॉन एलेग्जेंडर, हिंदी : विदूषक

क्रिस्टोफर कोलंबस

डेविड, चित्र : जॉन एलेग्जेंडर, हिंदी : विदूषक

क्रिस्टोफर कोलंबस का जन्म 1451 को जेनोआ, इटली में हुआ.
उसके माता-पिता थे सुज़ाना और डोमेनिको कोलोंबो.
डोमेनिको एक बहुत कुशल बुनकर थे.
सुज़ाना खुद एक बुनकर की बेटी थीं.

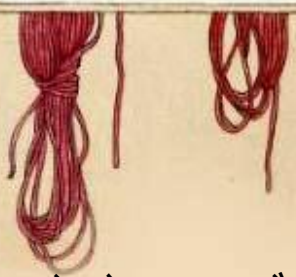

जेनोआ, लिगुरियन समुद्र के छोर पर था – और मेडीटरेनियन समुद्र का एक हिस्सा था. जब क्रिस्टोफर और अन्य लोग समुद्र को देखते तो उन्हें वो अंतहीन नज़र आता.

क्रिस्टोफर अपनी उम्र के हिसाब से काफी ऊंचा था. उसके पतले चेहरे पर झाइयाँ थीं. वो अपने पिता की दुकान में काम करता था पर उसका सपना कभी समुद्री जहाज़ में जाने का था.

अपने युवा काल में क्रिस्टोफर ने समुद्री नावों में कुछ समय के लिए सफ़र किया था. पर बड़े होने पर वो एक नाविक बनना चाहता था.

1476 में जब वो 27 वर्ष का था तब क्रिस्टोफर जहाज़ों के एक खेमें के साथ इंग्लैंड जा रहा था. फ्रेंच, समुद्री डाकुओं ने उसके जहाज़ पर आक्रमण किया जिससे उसका जहाज़ डूब गया. क्रिस्टोफर को चोट लगी पर वो समुद्र में कूद गया. भाग्यवश, वो एक लकड़ी का लट्ठा पकड़कर तैरता हुआ किनारे पहुंचा.

क्रिस्टोफर जहाँ पहुंचा वो जगह पुर्तगाल में थी. वो वहां पर ठीक होने तक रुका. बाद में वो वहां से लिस्बन गया जहाँ उसका भाई बार्थोलोम्यु रहता था. वहां पर दोनों भाईयों ने मिलकर एक दुकान चलाई जिसमें वो नाविकों को नक़्शे और समुद्री यात्रा सम्बन्धी किताबें बेंचते थे.

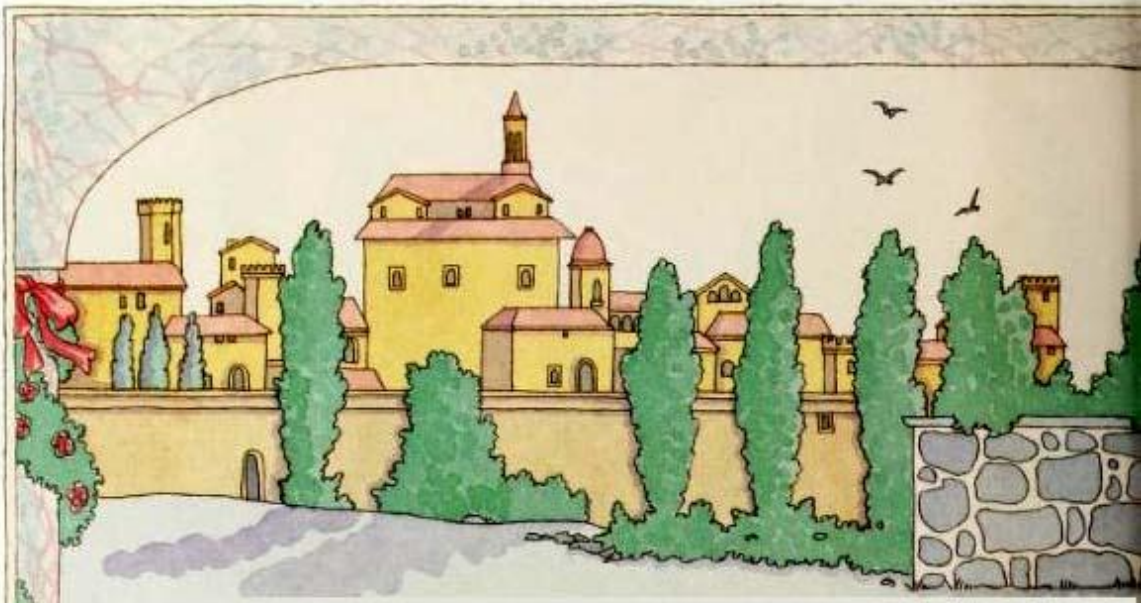

लिस्बन में क्रिस्टोफर ने डोना फेलिपा मोनिज़ द पेरेस्त्रेल्लो से शादी की. वो एक प्रभावशाली परिवार की बेटी थीं. उनका एक बेटा हुआ – डिएगो.

लिस्बन में पूर्व की ओर समुद्री यात्रा करने की खूब चर्चा थी. नाविक अफ्रीका होते हुए इंडीज – चीन, जापान और ईस्ट-इंडीज – भारत जाना चाहते थे. भारत से वो मूल्यवान जेवरात और मसाला लाना चाहते थे.

उस ज़माने में क्रिस्टोफर कोलंबस और अन्य लोगों को इतना ज़रूर पता था कि पृथ्वी गोल थी. पर पृथ्वी कितनी बड़ी थी? इसका उन्हें कोई अंदाज़ नहीं था. उन्होंने हमेशा इंडीज जाने के लिए पूर्व की दिशा में ही यात्रा की थी. कोलंबस को लगा कि उल्टी दिशा – यानि पश्चिमी दिशा में यात्रा करने से वो इंडीज जल्दी पहुँच जाएगा.

क्रिस्टोफर ने पुर्तगाल के राजा - जॉन द्वितीय से, यात्रा के लिए तीन जहाज़ देने की गुहार की. पर राजा ने जहाज़ देने से साफ़ इंकार कर दिया.

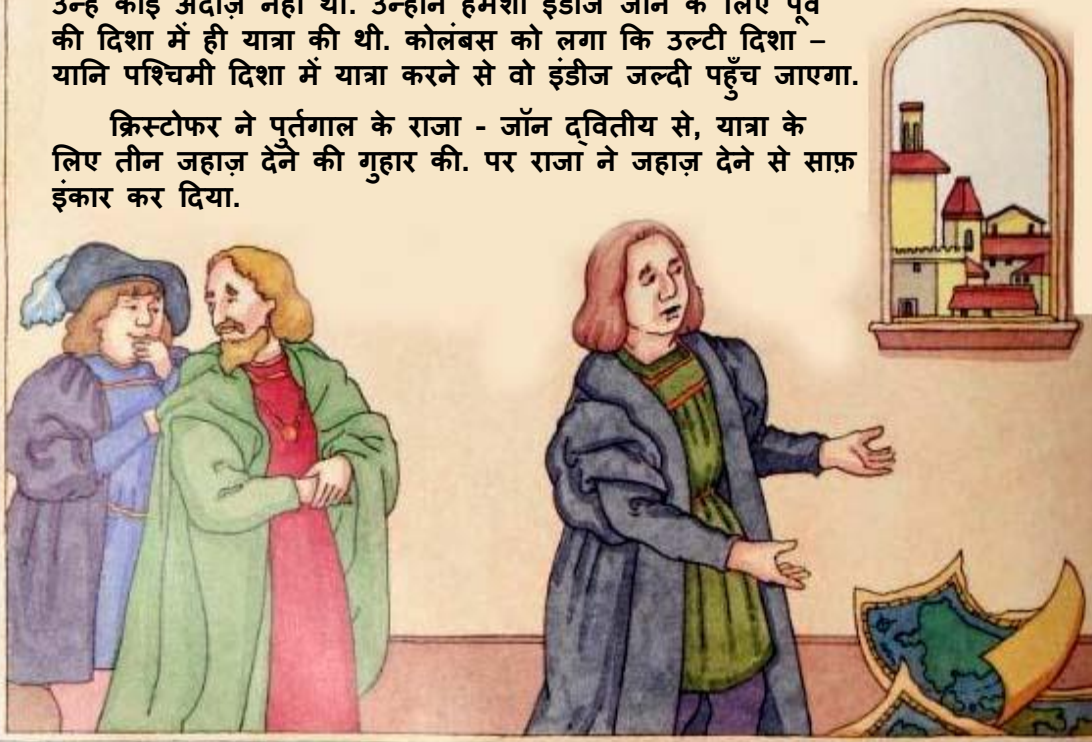

क्रिस्टोफर का भाई बार्थोलोम्यु, फ्रांस और इंग्लैंड के राजाओं के पास गया. उसने भी उनसे क्रिस्टोफर की पश्चिम यात्रा के लिए जहाजों की विनती की.

उन्होंने भी जहाज़ देने से मना कर दिया.

कुछ समय बाद क्रिस्टोफर की पत्नी फेलिपा का देहांत हुआ और फिर वो स्पेन चला गया. वहां पर क्रिस्टोफर ने बेअत्रिज़ से शादी की और उनके एक बेटा हुआ – फर्डीनांड.

क्रिस्टोफर ने स्पेन ने राजा फर्डीनांड और रानी इसाबेल्ला से भी पश्चिम यात्रा के लिए जहाज़ और पैसे देने की मांग की. पर वे भी मदद के लिए तैयार नहीं हुए.

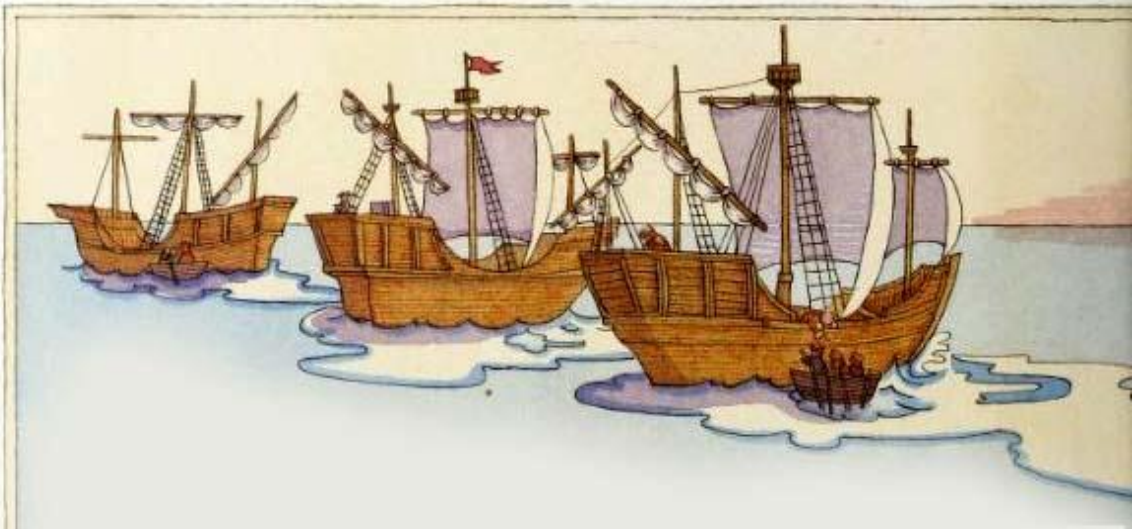

1492 में, बहुत साल इंतज़ार करने के बाद स्पेन के राजा और रानी ने क्रिस्टोफर की मदद की. उन्होंने क्रिस्टोफर को तीन जहाज़ दिए – नीना, पिंटा और सैंटा मारिया. उन्होंने साथ में जहाजों के लिए नब्बे नाविक भी दिए.

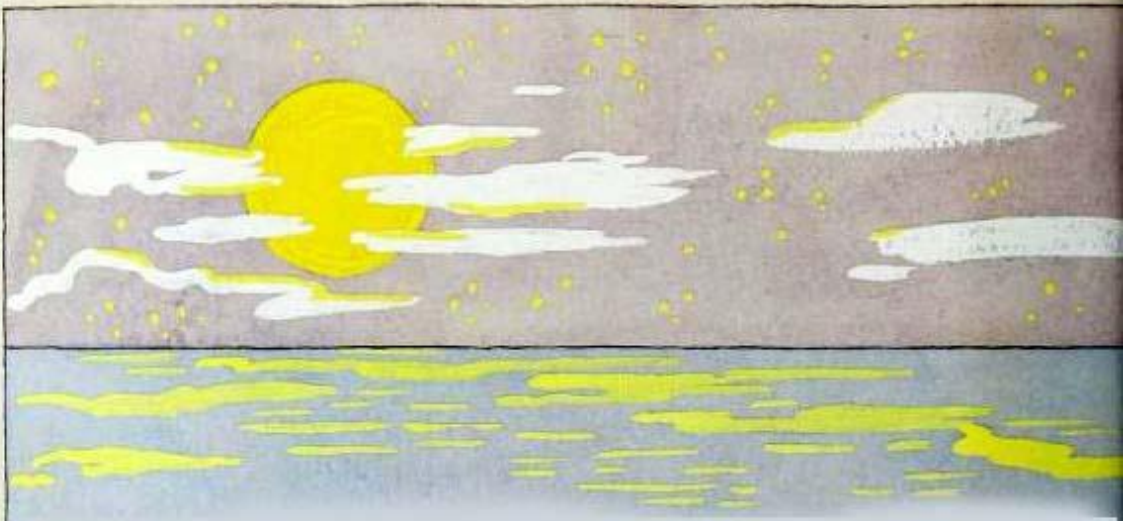

3 अगस्त 1492 को यात्रा शुरू हुई. नौ दिनों की यात्रा के बाद खोजी-दल पास के कैनरी आइलैंड पहुंचा. फिर 9 सितम्बर को जहाजों ने अटलांटिक महासागर में पश्चिम की ओर रुख किया. पश्चिम की ओर यात्रा का कोई पूर्व अनुभव न होने के कारण नाविक काफी डरे थे. वो बार-बार क्रिस्टोफर से वापिस चलने की प्रार्थना कर रहे थे. पर क्रिस्टोफर ने उन्हें आदेश दिया, "यात्रा ज़ारी रखो!"

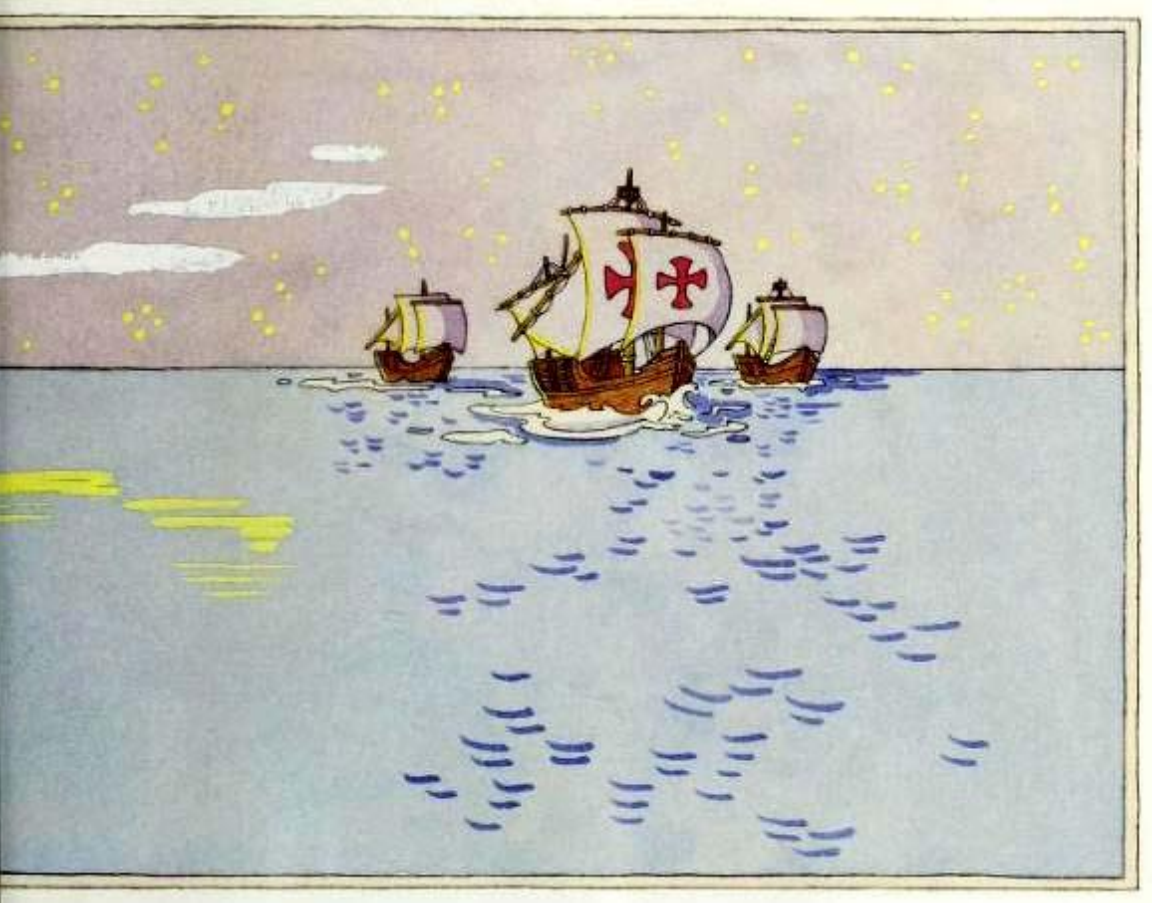

अक्टूबर के पहले हफ्ते में नाविकों को कुछ पक्षी और ज़मीन के कुछ चिन्ह दिखाई दिए. फिर 12 अक्टूबर को उन्हें ज़मीन दिखाई दी – वो एक टापू था जो फ्लोरिडा के दक्षिण-पूर्व में था.

क्रिस्टोफर कोलंबस और उसके लोग नावों के सहारे तट पर पहुंचे. वहां उन्होंने एक झंडा गाढ़कर टापू पर कब्ज़ा किया और उसे स्पेन की संपत्ति करार दिया. उन्होंने उसका नाम सैन साल्वाडोर रखा.

क्रिस्टोफर कोलंबस ने टापू के वाशिंदों को लाल टोपियाँ और कांच के मोतियों की मालायें भेंट कीं. उसे लगा जैसे उसका जहाज़ इंडीज पहुँच गया था इसलिए उसने स्थानीय लोगों को "इंडियंस" के नाम से बुलाया. पर असल में कौलंबस अमरीका यानि "न्यू वर्ल्ड" पहुँचा था.

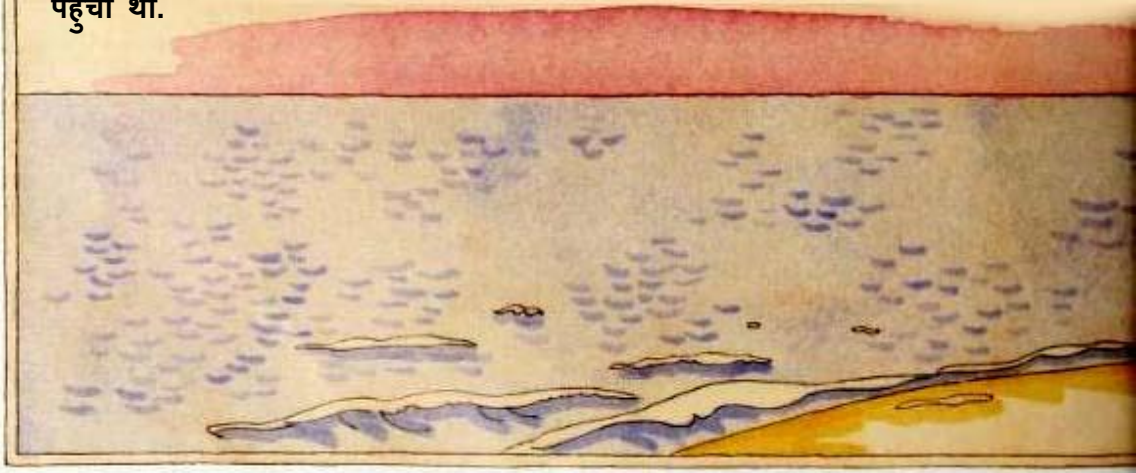

मार्च 1493 में क्रिस्टोफर कोलंबस वापिस स्पेन लौटा. वो अपने साथ सोना, तोते और कुछ "इंडियंस" भी स्पेन लाया. अपने कुछ नाविकों को उसने, सोने की खोज के लिए "न्यू वर्ल्ड" यानि अमरीका में ही छोड़ दिया.

जब वो स्पेन पहुंचा तो लोगों ने उसका एक हीरो जैसे स्वागत किया. राजा फर्डीनांड और रानी इसाबेल्ला ने उसे *"एडमिरल ऑफ़ द ओशन-सी"* की उपाधि दी.

सितम्बर 1493 में क्रिस्टोफर कोलंबस ने दुबारा पश्चिम की ओर कूच किया. इस बार उसने 17 जहाजों और एक हज़ार से भी ज्यादा नाविकों का नेतृत्व किया.

क्रिस्टोफर को पता चला कि जो लोग, पहली यात्रा के बाद सैन साल्वाडोर में रुके थे उन्होंने स्थानीय इंडियंस पर बहुत ज़ुल्म ढाए थे. इसलिए इंडियंस ने कोलंबस के सभी आदमियों को मार डाला था.

क्रिस्टोफर ने अन्य द्वीप भी खोज कर निकाले. उसने हिस्पनिओला में एक बस्ती आबाद की, और उसे स्पेन की रानी "इसाबेल्ला" का नाम दिया.

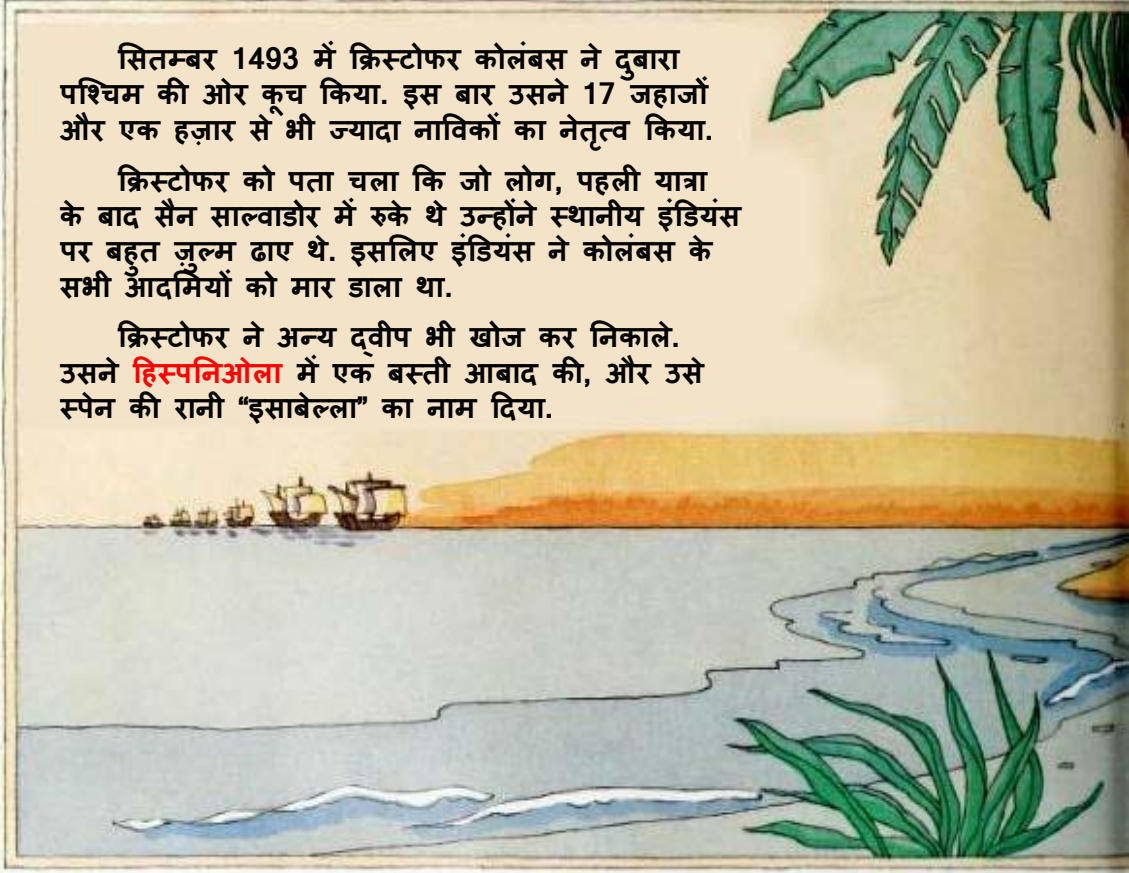

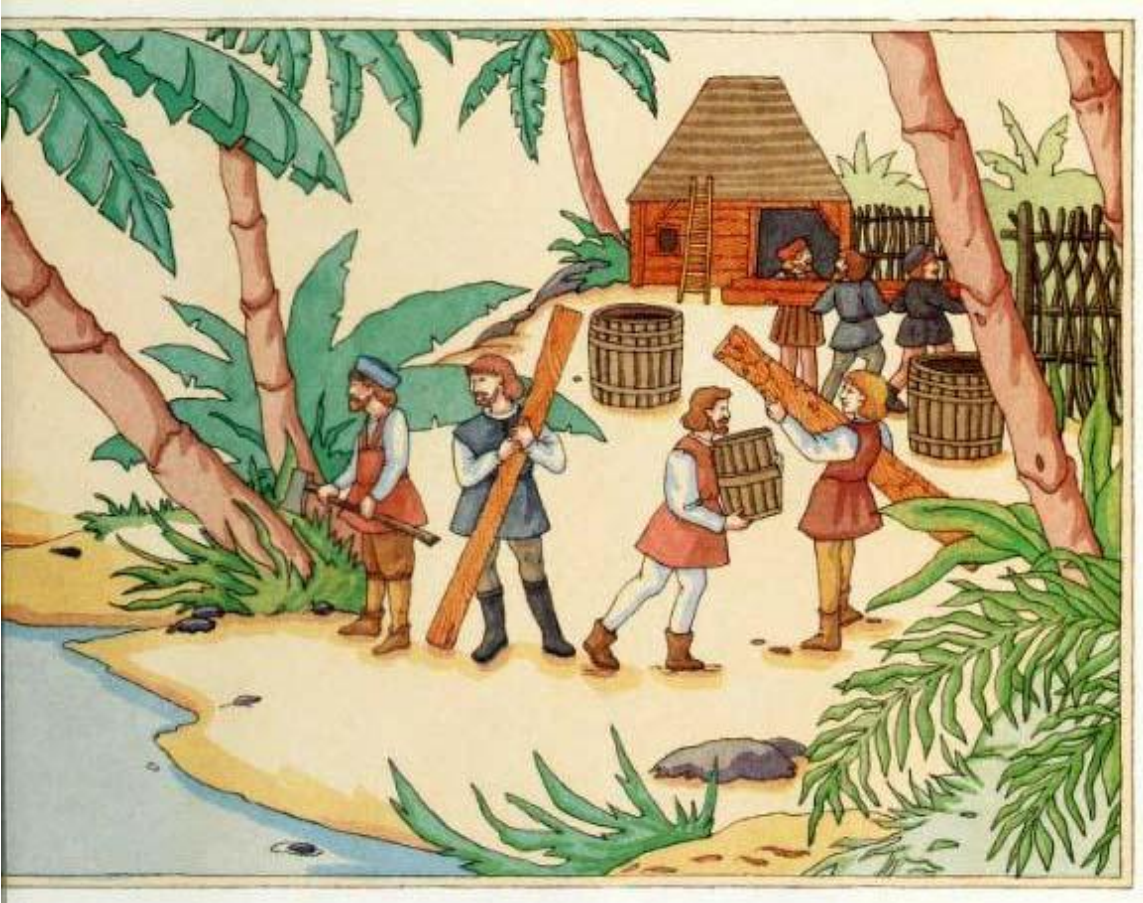

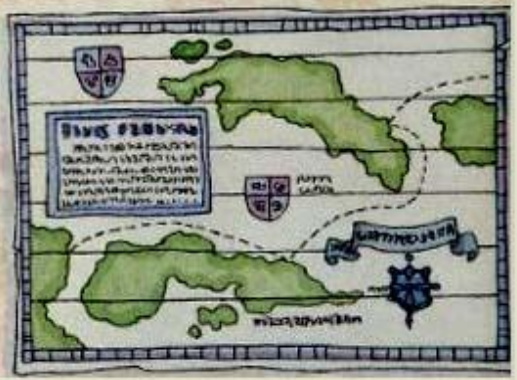

कोलंबस 1498 और 1502 में दो बार और अमरीका गया. जो लोग उसके साथ गए उन्हें सोना और अन्य बहुमूल्य चीज़ें पाने की बहुत आशा थी. पर उनके हाथ बहुत कम ही सोना लगा. अब क्रिस्टोफर कोलंबस हीरो नहीं रहा था.

चार बार अमरीका की यात्रा के बाद भी क्रिस्टोफर कोलंबस को लगा कि उसने इंडीज खोज निकला था. पर यह गलत था. जो देश उसने खोजा था उसका बाद में अमरीका नाम पड़ा.

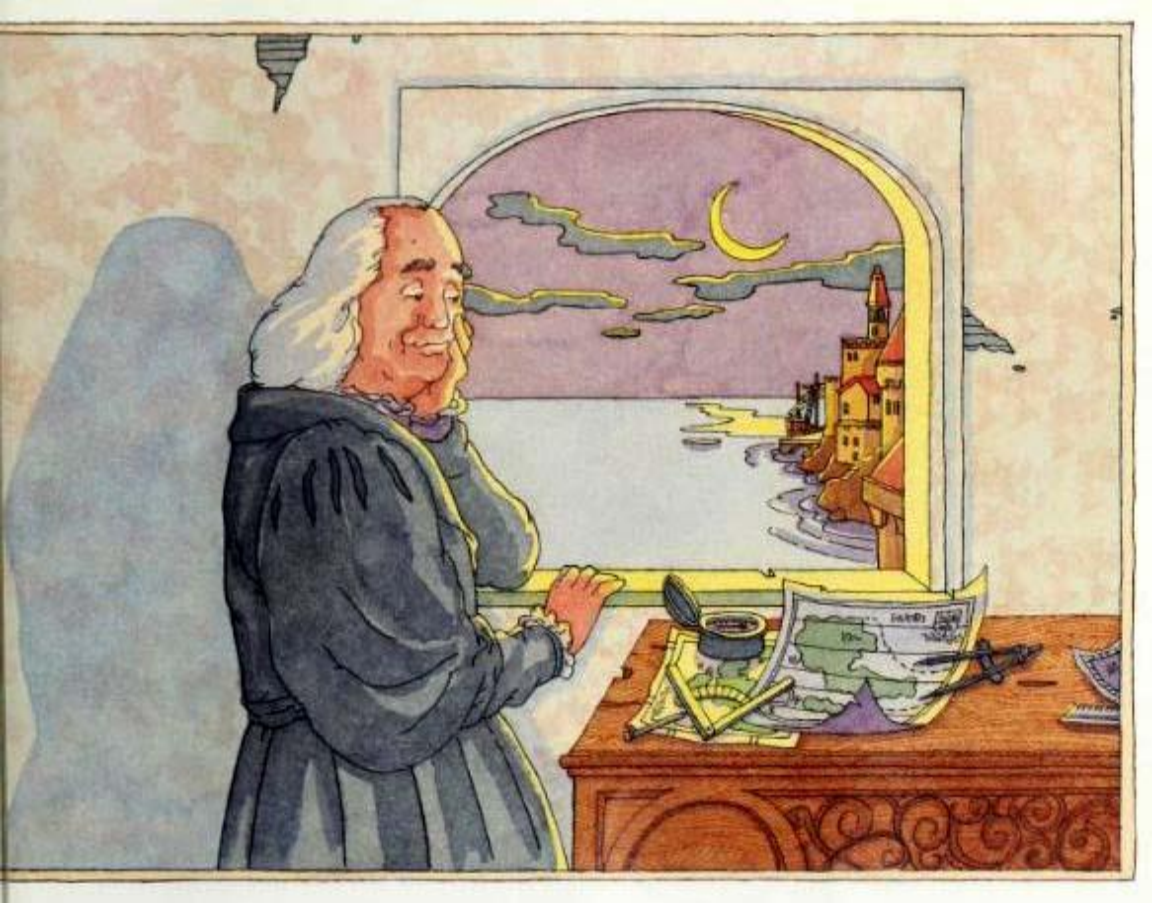

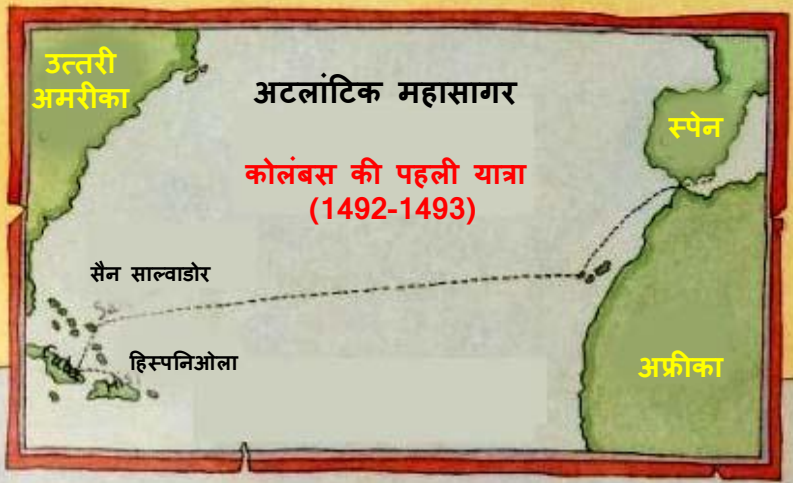
उत्तरी अमरीका
अटलांटिक महासागर
स्पेन
कोलंबस की पहली यात्रा
(1492-1493)
सैन साल्वाडोर
हिस्पनिओला
अफ्रीका

20 मई 1506 को वल्लादोलिद, स्पेन में क्रिस्टोफर कोलंबस का देहांत हुआ. वो एक महान नाविक था जिसने अनजाने अटलांटिक महासागर की पहली बार यात्रा करके अमरीका खोजा और फिर वापिस अपने वतन लौटा. उसने अमरीका यानि "न्यू वर्ल्ड" की खोज की.

महत्वपूर्ण तारीखें

1451	जेनोआ, इटली में जन्म.
1476	जिस जहाज़ में वो यात्रा कर रहा था उस पर आक्रमण हुआ.
	वो तैरकर किनारे लागोस, पुर्तगाल पहुंचा.
1479	डोना फेलिपा मोनिज़ द पेरेस्त्रेल्लो से शादी.
1480	बेटे डिएगो का जन्म.
1486	राजा फर्डीनांड और रानी इसाबेल्ला से यात्रा का खर्च उठाने की विनती.
	जनवरी 1492 में वे इसके लिए तैयार हुए.
1488	बेटे फर्डीनांड का जन्म.
1492	12 अक्टूबर को अमरीका पहुंचा.
1493-1496	अमरीका की दूसरी यात्रा.
1498-1500	तीसरी यात्रा जिसमें कोलंबस दक्षिण-अमरीका महाद्वीप पहुंचा.
1502-1504	चौथी यात्रा.
1506	20 मई को वल्लादोलिद, स्पेन में देहांत.